इतनी कथा कह, बैताल बोला ऐ राजा बिक्रम! उन तीनों में से वह कन्या किसकी स्त्री ऊई? राजा बोला वह जोरू उस की ऊई जो राक्षस को मारकर लाया. बैताल ने कहा सब का गुण बराबर है, किस तरह से वह उसकी जोरू ऊई? राजा ने कहा उन दोनों ने इहसान किया; इस से उन को सवाब हुआ. और यह लड़कर उसे मार के लाया है; इसवास्ते, वह इसकी जोरू हुई. यह बात सुन, बैताल फिर उसी दरख़्त में जा लटका. और राजा भी, वोंहीं जा, बैताल को बांध, कांधे पर रख, उसी तरह ले चला.

---

छठी कहानी.

फिर बैताल बोला ऐ राजा! धर्मपुर नाम एक नगर है. वहां का राजा धर्मशील. और उसके मंत्री का नाम अंधक. उसने एक दिन राजा से कहा महाराज! एक मंदिर बना, उस में देवी को बिठा, नित पूजा कीजिये कि इसका शास्त्र में बड़ा पुन्य लिखता है. तब राजा, एक मंदिर बनवा, देवी पधरा, शास्त्र की बिधि से पूजा करने लगा और बिन पूजा किये जल भी न पीता था.

इस तरह से, जब कितनी एक मुद्दत गुज़री, तो एक रोज़ दीवान ने कहा महाराज! मसल मशहूर है कि



निपूते का घर सूना, मूरख का हृदय सूना, और दरिद्री का सब कुछ सूना है. यह बात सुन, राजा देवी के मंदिर में जा, हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि हे देवी! तुझे बिरह्मा,(१) बिषनू,(२) रुद्र, इंद्र आठ पहर सेवते हैं; और तू ने महिषासुर, चण्ड, मुण्ड, रक्तबीज ले दैत्यों को मार, पृथ्वी का भार उतारा; और जहां जहां तेरे भक्तों को बिपत पड़ी, तहां तहां जा तू सहाय ऊई. और यही आस तक मैं तेरे द्वारे पर आया हूं. अब मेरे भी मन की इच्छा पूरी कर.

इतनी स्तुति जब राजा कर चुका, तब देवी के मंदिर से आवाज़ आई कि राजा! मैं तुझ से खुश ऊई; वर मांग जो तेरे मन में है. राजा बोला हे माता! जो तू मुझ से खुश ऊई तो मुझ को पुत्र दे. देवी ने कहा राजा! तेरे पुत्र होगा महाबली और बड़ा प्रतापी. तब तो राजा ने चंदन, अक्षत, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य देकर पूजा की. और इसी तरह से हर रोज़ पूजा करता था. गरज़, कितने दिनों के पीछे राजा के एक लड़का पैदा ऊआ. राजा ने बाजे गाजे से कुटुंब समेत जाकर देवी की पूजा की.

इस अरसे में, एक दिन का इत्तिफ़ाक़ है; कि किसी नगर से, एक धोबी, अपने दोस्त को साथ लिये, इस शहर की तरफ़ आता था, कि देवी का मंदिर उसे नज़र आया. उसने दंडवत करने का इरादः किया. इस में एक

(१) ब्रह्मा. (२) विष्णु.

धोबी की लड़की अति सुंदरी आती साम्हने से इस ने देखी. उसे देख, मोहित हुआ और देवी के दरशन को गया. दंडवत कर हाथ जोड़ उस ने अपने मन में कहा हे देवी! जो इस सुंदरी से मेरा बिवाह तेरी क्रपा से हो तो मैं अपना सिर तुझे चढ़ाऊं. यह मानता मान, दंडवत कर, दोस्त को साथ ले, अपने नगर को गया.

जब वहां पहुंचा तो उसके बिरह ने यह सताया, कि नींद, भूख, प्यास, सब बिसर गई. आठ पहर उसी के ध्यान में रहने लगा. यह बुरी हालत उस के दोस्त ने देख, उसके बाप से जा सब ब्यौरे वार कहा. उसका पिता भी यह सुनकर भैचक हो रहा; और अपने जी में चिंता कर कहने लगा कि इसकी दसा देख ऐसा मअलूम होता है जो उस कन्या से इसकी सगाई न होगी तो यह अपना प्राणत्याग करेगा. इस से बिहतर यह है कि उस लड़की से इसका ब्याह कर दीजिये कि जिस्से यह बचे.

इतना बिचार कर, पुत्र के मित्र को साथ ले, उस गांव में पहुंच, उस लड़की के पिता से जाकर कहा मैं तेरे पास कुछ जाचने आया हूं; जो तू देवे तो मैं कहूं. उन्ने कहा मेरे पास वह पदारथ होगा तो मैं दूंगा, तू कह. इस तरह से बचनबंद कर कहा तू अपनी लड़की मेरे पुत्र को दे. यह सुनके, उनने भी उसकी बात प्रमाण कर ब्राह्मण को बुलवा, दिन, लगन, मुहूरत ठहराकर कहा तुम लड़के को ले आओ, मैं भी अपनी लड़की के हाथ पीले कर दूंगा. यह सुन, वह वहां से उठ, अपने घर आ,



सब सामान शादी का तैयार कर ब्याहने को गया; और वहां जा, बिवाह कर, बेटे बहू को ले, फिर अपने घर आया. और दुलहा दुलहन आपस में आनंद से रहने लगे.

फिर कितने दिनों के बअद, उस लड़की के पिता के यहां कुछ शुभ करम था. सो वहां से नोता इन को भी आया. ये स्त्री पुरुष तैयार हो, अपने मित्र को साथ ले, उस नगर को चले. जब नगर के निकट पहुंचे तो देवी का मंदिर नज़र आया तो उसे वह बात याद आई. तब उनने अपने जी में बिचारकर कहा कि मैं बड़ा असत्यबादी अधरमी हूं, कि देवी से भी झूठ बोला. इतनी बात अपने मन में कह, उस दोस्त से कहा तुम यहां खड़े रहो, मैं देवी का दरशन कर आऊं. और स्त्री को कहा तू भी यहां ठहर. यह कह, मंदिर के पास पहुंच, कुण्ड में स्नान कर, देवी के सनमुख जा, कर जोड़ नमस्कार कर, खड्ग उठा गर्दन पर मारा. सिर तन से जुदा हो भूईं में गिरा.

गरज़, कितनी देर पीछे उसके मित्र ने बिचारा कि इसे गये बड़ी देर हुई है; अबतक फिरा नहीं; चलकर देखा चाहिये. और उसकी स्त्री को कहा तू यहां खड़ी रह; मैं उसे शिताबी से ढूंढके ले आता हूं. यह कहकर, देवी के मंदिर में गया. देखता क्या है कि धड़ से उसका सिर जुदा पड़ा है. यह हालत वहां की देख, अपने मन में कहने लगा कि संसार बहुत कठिन जागह है. कोई यह न समझेगा कि इन्ने अपने हाथ से सिर देवी को चढ़ाया है. बल्कि यह कहेंगे कि इसकी नारी जो अति सुन्दरी थी,

उसके लेनेके लिये मारकर यह मकर करता है. इससे यहां मरना उचित है; पर ससार में बदनामी लेनी खूब नहीं.

यह कह, तालाब में नहा, देवीके साम्हने आ, हाथ जोड़ प्रणाम कर, खांड़ा उठा गले में मारा कि रुण्ड से मुण्ड जुदा हो गया. और यह यहां अकेली खड़ी खड़ी उताकर, राह देख देख निरास हो, ढूंढती ऊई देवी के मंदिर में गई. वहां जाके देखती क्या है कि दोनों मुए पड़े हैं. फिर इन दोनों को मुआ देख उनने अपने जी में बिचारा लोग तो यह न जानेंगे कि आप से देवी को ये बल चढ़े हैं. सब कहेंगे कि रांड नष्ट थी; बदकारी करने के लिये दोनों को मार आई है. इस बदनामी से मरना उचित है.

यह सोचकर, सरोवर में गोतः मार, देवी के सनमुख आ, सिर नवां दंडवत कर, तलवार उठा चाहे गरदन में मारे कि देवी ने, सिंहासन से उतर, उसका हाथ आनके पकड़ा; और कहा पुची! बर मांग, मैं तुझ से प्रसन्न ऊई. तब उन्ने कहा माता! जो तू मुझ से खुश ऊई है तो इन दोनों को जी दान दे. फिर देवी ने कहा इनके धड़ों से सिर लगा दे. इनने, मारे खुशी के घबराहट से, सिर बदल के लगा दिये. और देवीने अम्हत ला छिड़क दिया. ये दोनों जीकर उठ खड़े ऊये; और आपस में झगड़ने लगे. यह कहे स्त्री मेरी; और वह कहे स्त्री मेरी.

इतनी कथा कह, बैताल बोला कि ऐ राजा बीर



बिक्रमाजीत! इन दोनों में वह स्त्री किसकी ऊई. राजाने कहा सुन शास्त्र में इसका प्रमाण लिखता है; कि नदियों में गंगा उत्तम है, और परबतों में सुमेर(१) पर्वतश्रेष्ठ है, और बरछों में कलपवृक्ष,(२) अंगों में मस्तक उत्तम है. इस न्याव से जिसका उत्तम अंग है उसी की स्त्री ऊई. इतनी बात सुन, बैताल फिर उसी दरख़्त में जा लटका. और राजा भी जा उसे बांध कांधे पर रख कर ले चला.

———

### सातवीं कहानी.

बैताल बोला कि ऐ राजा! चंपापुर नाम एक नगर है. वहां का राजा चंपकेश्वर. और रानी का नाम सुलोचना. और बेटी का नाम चिभूबनसुंदरी.(३) सो अति सुंदरी है. जिस का मुख चंद्रमा सा; बाल घटा से; आंखें म्हगकी सी; भवें धनुष सी; नाक कीरकी सी; गला कपोत का सा; दांत अनार के से दाने; होंठों की लाली कंदूरी की सी; कमर चीते की सी; हाथ पांव कोमल कंवल से; रंग चंपेका सा. ग़रज़, उसके जोबन की जोत दिन ब दिन बढ़ती थी.

जब वह ब्याहन योग ऊई तो राजा रानी अपने चित में चिंता करने लगे. और देस देस के राजाओं को यह

(१) सुमेरु. (२) कल्पवृक्ष. (३) त्रिभुवनसुन्दरी.